अध्याय–5

# बिरजू महाराज

## ■ जीवन परिचय एवं योगदान :

लखनऊ घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक अच्छन महाराज के सुपुत्र बिरजू महाराज का असली नाम बृजमोहन मिश्र है। इनका जन्म 4 फरवरी 1938 में हुआ। बाल्या काल से ही नृत्य की शिक्षा अपने पिता से ली। लेकिन जब आप 10 वर्ष के थे तभी आपके पिता का निधन हो गया और तत् पश्चात् आपने नृत्य की शिक्षा अपने चाचा शंभु महाराज से ली। आप लखनऊ घराने के सुप्रसिद्ध प्रतिनिधि कलाकार के रूप में माने जाते हैं।

बिरजू महाराज

अपने परिशुद्ध ताल और भावपूर्ण अभिनय के लिए प्रसिद्ध बिरजू महाराज ने एक ऐसी शैली बिकसित की है जो उनके दोनों चाचाओं और पिता से संबंधित तत्वों को सम्मिश्रित करती है। आपके पदचालन की सक्षमता और मुख एवं ग्रीवा संचालन की परख एवं चलन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। बिरजू महाराज ने राधाकृष्ण प्रसंगों के वर्णन के साथ विभिन्न सामाजिक तथा पौराणिक विषयों पर स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए नृत्य की शैली

में नूतन प्रयोग किए हैं। आपको अनेक सम्मान से नवाजा गया है जिनमें पद्मविभूषण, कालीदास पुरस्कार लता मंगेशकर पुरस्कार, सोवियत संघ द्वारा नेहरू फेलोशिप, ....इत्यादि प्रमुख हैं। बिहार सरकार द्वारा वर्ष 2013 में राज्य कला पुरस्कार के राष्ट्रीय पुरस्कार के श्रेणी में संगीत में महती योगदान के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

रचनात्मक प्रतिभा के आप धनी कलाकार हैं। ठुमरियों की रचना एवं भाव प्रदर्शन में आप अद्वितीय हैं। आपके अनगिनत शिष्य-शिष्याएँ भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त कलाकार हैं। दिल्ली के प्रतिष्ठित कथक केन्द्र स्थान के आप लंबे समय तक निदेशक रहे हैं।

आपके नेतृत्व में कथक पूरे देश में एक नए रूप में स्थापित हुआ है। वर्त्तमान में आपके द्वारा दिल्ली में **कलाश्रम** नामक संस्था की स्थापना की गई है जो, मुख्य रूप से कथक नृत्य के प्रशिक्षण और शोध में कार्यरत है। आपने संगीत के क्षेत्र में लयकारियों पर महती कार्य किया है। बोल परण के अतिरिक्त आपने मात्र गिनतियों का प्रयोग कर लयों की बहुत ही अच्छी एवं कठिन संरचना की है जो देखने और सुनने में जितना सरल लगता है विद्वानों के लिए उतना ही जटिल है। नृत्य को आम जीवन से जोड़कर आपने इसे जनसाधारण के लिए सुग्राह्य बनाया है।

बिरजू महाराज एक निपुण गायक नर्तक एवं कवि भी हैं। आप वाद्ययंत्र बजाने में भी सिद्धहस्त हैं। आपने नृत्य के कई कार्यक्रमों में पखावज बजाकर संगत भी की है। आपने फिल्मों में भी नृत्य निर्देशन किया है एवं कथक नृत्य को फिल्मों में प्रतिष्ठा दिलाई है। इतनी ऊँचाइयों को छूने के बावजूद आपका व्यक्तित्व बहुत नम्र एवं सरल है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु होकर अपनी नवीन कल्पनाओं द्वारा नृत्याकाश में उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति चिरकाल तक जगमगाते रहे।

## प्रश्न

1. पं०बिरजू महाराज किस घराने के नर्त्तक है ?
2. नृत्य करने के अलावा महाराज जी और कौन से वाद्ययंत्र बजाते हैं ?
3. संगीत में नृत्य के क्षेत्र में पं० बिरजू महाराज के योगदान का वर्णन करें।
4. महाराज जी को कितने सम्मान से नवाजा गया है ?

## यामिनी कृष्णमूर्ति

भारतीय सांस्कृतिक विरासत के पुरूज्जीवन के परिपेक्ष्य में यामिनी कृष्णमूर्ति आज परम्परागत शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम की श्रेष्ठ नर्त्तकियों में हैं। सन् 1957 में उन्होंने अपना प्रथम कार्यक्रम प्रस्तुत किया और यहीं से उन्हें प्रसिद्धि मिलनी शुरू हो गई। नृत्य मुद्राओं की परिपूर्णता अंगशुद्धि, विशिष्ट और प्रभावकारी अभिनय एवं अभिव्यक्ति अद्‌भुत लयज्ञान तथा शिखर पर पहुँचा दिया। आप सन् 1950 से पाँच वर्षों तक कलाक्षेत्र में रहीं और श्रीमति रूक्मिणी अरूण्डेल के निर्देशन में नृत्य सीखा। बाद में यामिनी को सरकारी छात्रवृत्ति मिली जबकि उन्होंने बाल सरस्वती के गुरू कांजीवरम् एलप्पा पिल्लै और गुरू किटप्पा पिल्लै से भरतनाट्यम सीखा। उन चार वर्षों में यामिनी ने– वेदान्तम लक्ष्मीनारायण शास्त्री पशुपति वेणुगोपाल, कृष्णशर्मा तथा अन्य से कुच्चीपुड़ी भी सीखा। अपने

उत्कृष्ठ प्रदर्शन के साथ आपने भारत भर का भ्रमण किया। आपने अपना कर्मक्षेत्र दिल्ली को बनाया और यहीं से आप सभी अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में नृत्य प्रस्तुत करती रही। आपने पाकिस्तान, नेपाल, वर्मा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथ यूरोपीय देशों की यात्रा की।

कुच्चीपुड़ी नृत्य में भी आपका योगदान उल्लेखनीय है। आपने गुरू पंकज चरणदास--से ओडिसी नृत्य भी सीखा तथा 'पंचकन्यां' नृत्य पेश किया। आपकों भारत सरकार द्वारा सन् 1968 में पद्मश्री के अलंकरण से विभूषित किया गया। भरतनाट्यम नृत्य में आपका योगदान उत्कृष्ट है।

## प्रश्न

1. नृत्यांगना यामिनी कृष्णमूर्त्ति के गुरू कौन थे ?
2. यामिनी कृष्णमूर्त्ति को किस-किस अलंकारण से नवाजा गया ?
3. क्या आप भरतनाट्यम नृत्य सीखना पसन्द करेंगी ?
4. यामिनी कृष्णमूर्त्ति का जीवन परिचय एवं नृत्य में योगदान को वर्णित करें

# गुरु केलुचरण महापात्र

गुरु श्री केलुचरण महापात्र भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक महान हस्ती के रूप में जाने जाते हैं। गुरू केलुचरण महापात्र ओडिसी शास्त्रीय नृत्य का एक अलग स्वरूप लेकर 20 वीं शताब्दी में उभरे।

गुरु श्री केलुचरण महापात्र

इनका जन्म 8 जनवरी 1926 ई० में जगन्नाथ पुरी स्थित रघुराजपुर गाँव में हुआ था। बाल्यवस्था से ही गाँव में गोटिपुआ' (लड़का-लड़की वेश में नृत्य करते) नृत्य मंडली में नृत्य किया करते थे। तदोपरान्त् स्व० मोहन सुंदर देव गोस्वामी के नृत्य दल में शामिल हो गए, इस दल में शामिल होकर सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में विभिन्न भूमिका में अभिनय प्रदर्शित करने लगे, इसके बाद केलुचरण जी केलुचन्द्र पटनायक के उड़िया रंगमंच में कार्य करना आरंभ किया इन्होंने अन्नपूर्णा रंगमंच के बी ग्रुप में भाव एवं अभिनय गुरु के रूप में काम किया। इसी मंच पर कार्यरत रहते हुए इन्होने गुरु पंकज-चरण दास, ध्रुवचन्द्र सिंह और गुरु दयाल शरण जैसे गुरुजनों से नृत्य शिक्षा प्राप्त की तदोपरान्त गुरू के रूप में ख्याति प्राप्त करने लगे।

गुरू केलुचरण महापात्र ने ओडिसी नृत्य में बहुत सारा प्रयोग किया और सफलता प्राप्त की देश-विदेश में इनकी ख्याति फैलने लगी। सर्वप्रथम ओडिसा में गुरू केलुचरण महापात्र को पद्मविभूषण से नवाजा गया। सन् 1935 से 2004 तक ये कोरियोग्राफी करते रहे 7 अप्रैल 2004 को भुवनेश्वर में इनका देहान्त हो गया। आज देश-विदेश में इनके अनेक छात्र छात्राएँ इसको फैला रहे है। यह ओडिसी नृत्य जगत की अपूर्णीय क्षति थी।

## प्रश्न

1. क्या केलुचरण महापात्र को बाल्यअवस्था से नृत्य में रूचि थी ?
2. गुरू केलुचरण महापात्र का जन्म कब हुआ था ?
3. गुरू केलुचरण महापात्र को कौन सा पुरस्कार मिला क्या पहले भी किसी को ओडिसी नृत्य में यह पुरस्कार मिला है।
4. गुरू केलुचरण महापात्र के कौन-कौन गुरू जन थे ?
5. गुरू केलुचरण महापात्र ने कब से कोरियोग्राफी कार्य आरंभ किया था तथा इनकी मृत्यु कब और कहाँ हुई?

❑

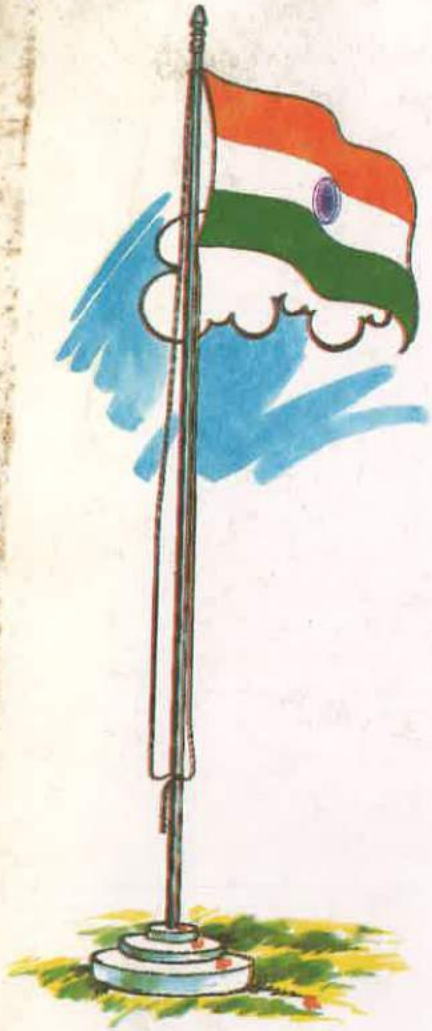

# राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक :-बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, शाहगंज पटना-800 006